IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

धर्मवीर भारती द्वारा रचित "अंधायुग" नाटक में युद्ध की विभीषिका की प्रासंगिकता

Ku. Rinku A. Vadher
Assistant Professor, Department of Hindi
Shree M. P. Shah Arts and Science College, Surendranagar, Gujarat, India

प्रस्तावना

'अंधा युग' धर्मवीर भारती द्वारा रचित एक प्रसिद्ध और बहुचर्चित गीतिनाट्य है. इस नाटक के द्वारा धर्मवीर भारती ने युद्ध की निरर्थकता बताते हुए ये समझाने का प्रयास किया है कि युद्ध किसी भी स्थिति में मानव समुदाय के लिए हितावह नहीं है. युद्ध की कालिमा मनुष्यता को न सिर्फ़ जर्जरित करती है बल्कि वह आने वाले भविष्य के लिए खतरा भी पैदा कर सकती है. इसके विपरीत परिणाम मनुष्य ह्रदय पर संत्रास और अवसाद की स्थिति को उत्पन्न करते है फिर चाहे वो महाभारत का युद्ध हो या आज के विभिन्न देशों के युद्ध. युद्ध कभी भी मानव जीवन के लिए शुभता का संकेत लेकर नहीं आ सकता.

बीज शब्द : युद्ध, मानव, विभीषिका, बर्बरता, महाभारत, संवेदना.

इस नाटक की कथावस्तुमहाभारत के अट्ठारवें दिन की संध्या से लेकर प्रभास- तीर्थ में कृष्ण की मृत्यु केक्षण तक की पौराणिक कथा का एक अंश है. इसकी कथावस्तु पौराणिक होते हुए भी आधुनिक मानवबोध और मानवीय संवेदना से जुड़ी हुई है. इसकी कथावस्तु पाँच अंकों में विभाजित है. स्थापना – अंधायुग, पहला अंक – कौरव नगरी, दूसरा अंक – पशु का उदय, तीसरा अंक – अश्वत्थामा का अर्द्धसत्य, अंतराल – पंख, पहिये और पट्टियाँ, चौथा अंक – गांधारी का शाप, पाँचवाँ अंक–विजय :एकक्रमिकआत्महत्या, समापन – प्रभु की मृत्यु. ये नाटक रंगमंच और रेडियो नाटक की दृष्टि से बहुत सफल रहा है. लेखक ने इसमें तीन अंकों के बाद अन्तराल का प्रयोजन किया है. जिसमें कथा निर्देश के माध्यम के लिए कथा गायन आदि को रखा गया है. "नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना के लिए पौराणिक सन्दर्भों के साथ-साथ भारती ने कल्पना का भी सहारा लिया है. इस प्रख्यात कथावस्तु में युद्धोत्तर मूल्यहीनता, अमानवीयता, विकृत, वैयक्तिक, सामाजिक विघटन, युद्ध की अणु संस्कृति, टूटती हुई मर्यादेव्म जीवन की कुरूपता के बीच से गुजरते हुए मर्यादा एवं आस्थ की शुभ्र ज्योति प्रज्ज्वलित की गयी है."[१] इस नाटक में उन्हीं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

पौराणिक पात्रों को लिया है जिसके माध्यम से भारती जी युद्ध के बाद की विभीषिका को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कर सके. साथ ही कुछ काल्पनिक पात्रों का सहयोग भी लिया है. अश्वत्थामा, गांधारी, धृतराष्ट्र, युयुत्सु, विदुर, युधिष्ठिर, संजय, प्रहरी १. और प्रहरी २.वृद्ध याचक, कृष्ण आदि.

अंधा युग युद्धोपरांत की मानसिकता का काव्य है. इस नाटक में जिन समस्याओं को उठाया गया है वो आज भी उसी रूप में प्रासंगिक है. दो-दो विश्वयुद्ध के आत्मघाती आघात के बाद मानव जीवन आशंकित, भयभीत, और अनेक निराशाओं से घिर गया था. इस नाटक में उन्हीं युद्धोपरांत की समस्याएँ उठाने के पीछे भारती जी का आशय स्पष्ट था. वह युद्ध के बाद की नकारात्मकता को अपने पाठक के सामने रखना चाहते थे. "विश्वयुद्धों की विभीषिका के पश्चात सांस्कृतिक विघटन की जो भयंकर समस्या विश्व मानव के सामने आयी, वह बहुत कुछ महाभारत युद्ध के उपरान्त आयीविकृति, अमर्यादा एवं नैतिकता जैसी ही है. महाभारत की तरह ही द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात भी धर्म, ईश्वर, नैतिकता, सत्य, मर्यादा, आचरण, मानवीय मूल्य और जीवन दर्शन की मीनारें तेजी से ढहने लगी."[२]महाभारत के युद्ध में जितने के लिए दोनों ही पक्ष कई कूटनीतिओं और असत्य का सहारा लेते है. इस युद्ध में विजय तो पांडवों की हुई पर सत्य-असत्य, नीति-अनीति, न्याय-अन्याय, आदि क्षत-विक्षत हो जाता है. कुछ अगर बचा रहता है तो वो है सिर्फ़ सवाल. जो युद्ध न्याय के लिए, सत्य के लिए,धर्म के लिए, लड़ा जाता हैदरअसल युद्ध मेंउन्हीं का नाश हो जाता है. कौरव नगरी में प्रहरी पहरा दे रहे है जहाँ अब कुछ भी रक्षणीय नहीं था. अंधा युग में महाभारत कथा के उन मर्म बिन्दु का चित्रण किया गया है जो युद्धोत्तर समाज में व्याप्त निराशा, कुंठा, अनास्था, निरर्थकता, को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करता है. दो विश्वयुद्ध के बाद की भयावहता उस समय के युग में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी. भय, मृत्युबोध, निराशा, निरर्थकता और अनास्था के स्वर तत्कालीन समाज में बुरी तरह से व्याप्त थे. भारती जी ने अंधा युग में इन्हीं गिरते, बिखरते और जूझते हुए मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया है.

"अंधा युग" युद्ध के बाद का युग है. युद्ध के बाद जैसे सभी के मन में अंधा युग जन्म लेता है. जिसमें अगर कुछ बची रहती है तो वह है अश्वत्थामा की पशुता, और बर्बरता. जो नृशंस विध्वंस से भरे प्रतिशोध की भावनाओं से घिरी हुई नकारात्मकता को मार्मिक रूप से प्रस्तुत करती है. युद्ध के बाद मानव मन घृणा और कुंठा से आहत होता है. युद्ध की विभीषिका से जो रक्तपात हुआ है वो लगातार त्रास, प्रतिशोध और एक प्रकार की दिशाहीनता को जन्म देने वाली स्थिति है. अश्वत्थामा, युयुत्सु, विदुर, संजय सभी युद्ध के बाद की मनोदशा से घिर जाते है. अश्वत्थामा जिस

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

प्रकार प्रतिशोध की अग्नि में जलकर ब्रह्मास्त्र छोड़ देता है. जो की संपूर्ण जगत के लिए विनाशकारी हो सकता है. व्यास अश्वत्थामा को कहते है.

"ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस ब्रह्मास्त्र का ?
यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नरपशु.
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठ्ग्रस्त
साडी मनुष्य जाति बौनी हो जायेगी
जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा-सदा के लिए होगा विलीन वह
गेहूँ की बालों में सर्प फुफ्कारेंगे
नदियों में बह-बह कर आयेगी पिघली आग."(३)

इस नाटक का प्रकाशन १९५४ में हुआ था. उसके बाद आज के युग में भी देखे तो कई देश आपस में युद्ध लड़ रहे है. जिसके भयंकर परिणाम होते है और जो मानवता काविध्वंस करते है. आज स्थिति ऐसी है कि जिस देश के पास परमाणु अस्त्र और शस्त्र अधिक हो वह शक्तिशाली कहलाता है. पर दरअसल ये मानव जीवन के लिए एक तरह का घातक भी है. मनुष्य - मनुष्य को मारने के लिए जैसे आतुर बना है. ये मानवता का विध्वंस ही है.बर्बरता और प्रतिशोध से आहत मनुष्यता नष्ट हो रही है. युद्ध में कोई विजयी होता ही नहींक्योंकि इसमें मानवीय मूल्यों की पराजय होती है. उदाहरण स्वरूप भारत, पाकिस्तान का कश्मीर या सरहदको लेकर एक-दूसरे पर हमला या इरान,ईराक,अफघानिस्तान,अमेरिका,सीरिया, रशिया,युक्रेनआदि कई देश के युद्ध आज के युगमें मनुष्य-मनुष्य के बीच के संघर्ष और मानव द्वारा निर्मित आपदाओं को ही निमंत्रणदेते है.

निष्कर्षत: अंधायुग युद्धोपरांत की मानसिकता पर व्यंग्य करने वाली गाथा है. जो युद्ध के बादकी निराशा, कुण्ठा,निरर्थकता, भय, अनास्था, आदि को आज के समय में उसी रूप में नासिर्फ़ प्रस्तुत करती है बल्कि इस कृति की आज भी उतनी हीप्रासंगिकता है. युद्ध की विनाशकता कभी भी शान्ति का सन्देश लेकर नहीं आ सकती.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

सन्दर्भ सूचि

[1].धर्मवीर भारती युग चेतना और अभिव्यक्ति - डॉ. सरिता शुक्ला पृष्ठ १८६ प्रकाशक - चिंतन प्रकाशन

[2]. धर्मवीर भारती युग चेतना और अभिव्यक्ति - डॉ. सरिता शुक्ला पृष्ठ १८५ प्रकाशक - चिंतन प्रकाशन

[3].अंधा युग - धर्मवीर भारती पृष्ठ ७५ प्रकाशक - किताब महल